DOI: 10.51220/hjssh.v5i1.8
Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 5 pp.71 -80, December, 2010, ISSN. 0975 - 9891

मत्स्यपुराण में वर्णित प्राकृतिक संरक्षण की महत्ता का संक्षिप्त विश्लेषण

कुसुम डोबरियाल एवं जे0के0 गोदियाल
संस्कृत विभाग
हे0नं0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी गढ़वाल
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय), 246001, उत्तराखण्ड।

Received: 14-4-2010 **Revised: 19-8-2010** **Accepted: 28.11.2010**

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में मत्स्यपुराण में वर्णित प्रकृति संरक्षण के विभिन्न कारकों, यथा–वृक्षारोपण, वन संरक्षण, जलसंरक्षण, वनस्पति एवं औषधीय पादप संरक्षण, वन्यजीव एवं खनिज सरंक्षण, को विश्लेषित किया गया है।

Keywords- Matsya Puran, Nature conservation

जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या है जिस पर निरन्तर अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर विचार विमर्श चल रहा है। कोपेनहेगन सम्मेलन में भी कोई ठोस परिणाम नहीं निकल पाया क्योंकि अमेरिका सहित कई विकसित देश कार्बन उत्सर्जन को कम करने की दिशा में सार्थक पहल नहीं करना चाहते। वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने की परम आवश्यकता है अन्यथा इस सृष्टि को प्रलय से बचाना अत्यन्त कठिन होगा।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों–वेद एवं पुराणों में प्राचीन काल से ही सृष्टि की रक्षा के लिए सामाजिक जागृति की दिशा में सार्थक पहल हुई है। यद्यपि तत्कालीन समय में पर्यावरण प्रदूशण की विभीषिका नहीं थी किन्तु तब भी यह सन्देह व्यक्त किया गया था कि जलवायु परिवर्तन एवं वैश्विक तापन ही सृष्टि की प्रलय के कारण बनेंगें। विवेचकों द्वारा पूर्व में[1–2] पद्मपुराण पर आधारित प्राकृतिक संरक्षण सम्बन्धी विवेचन प्रस्तुत किया जा चुका है। प्रस्तुत शोध पत्र में मत्स्यमहापुराण[3] पर आधारित प्रकृति संरक्षण एवं संवर्धन हेतु सामाजिक जागरूकता पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मत्स्यपुराण अठारह पुराणों में से एक महत्वपूर्ण पुराण है जिसके अध्ययन से पुरुषार्थ सिद्धि के विविध उपाय ज्ञात होते हैं और जिनका अनुष्ठान करने से मनुष्य अपना कल्याण कर सकता है। मत्स्य पुराण में कुल चौदह हजार श्लोक है जिन्हें 291 अध्यायों में बांटा गया है, सृष्टि की सुरक्षा पुराणों का महत्त्वपूर्ण वर्ण्य विषय है अतः मत्स्यपुराण में भी ऐसे कई अध्याय हैं जिनमें प्राकृतिक सम्पदा एवं उनके संरक्षण के विषय में जागृति फैलाने का प्रयास किया गया है।

©SHARAD

मत्स्यपुराण का प्रारम्भ ही सृष्टि के संरक्षण की महत्ता उजागर करता है। इससे समाज को आभास होता है कि सृष्टि का संरक्षण हमारे स्वयं के अस्तित्व से जुड़ा है। अतः, वे सभी प्रयास करने जरूरी हैं जिससे हम स्वयं के साथ–साथ अपनी सृष्टि की रक्षा कर सकें।

वृक्षारोपण एवं वन सरंक्षण

मत्स्यपुराण[4] के अनुसार भगवान मत्स्य ने मनु को वृक्षारोपण की महत्ता का वर्णन करते हुए पौराणिक विधि को विस्तार से समझाया। तात्पर्य यह था कि वृक्षारोपण श्रद्धापूर्वक करें, ऐसा करते समय उत्सव मनायें, द्विजों को भोजन करायें तथा मनपंसद वस्तुओं का दान करें। जो व्यक्ति इस प्रकार वृक्षारोपण करेगा वह सुखी रहेगा तथा अपार पुण्य का भागी बनेगा।

पादपानां निधिं वक्ष्ये तथैववोद्यानभूमिषु।
तड़ागविधित्म सर्वमासाद्य जगदीश्वर।।
ऋत्विंगमण्डपसम्भारमाचार्य चैव तद्विधम्।
पूजयेद् ब्राह्मणांस्तद्वद्धेमवस्त्रानुलेपनैः।।
सर्वौशध्युदकैः सिक्तान दध्यक्षतविभूषितान्।
वृक्षान् माल्यैरलंकृत्य वासोभरिभिवेष्टयेत्।।
सूच्या सौवर्णया कार्यं सर्वेषां कर्णवेधनम्।
अंजनं चापि दातव्यं तद्वद्धेमशलाकया।।
फलानि सप्त चाष्टौ वा कलधौतानि कारयेत्।
प्रत्येकं सर्ववृक्षाणां वेद्यां तान्यधिवासवेत्।।

(मत्स्यपुराण/59/2–6)

अनेन विधिना यस्तु कुर्याद् वृक्षोत्सवं बुधः
सर्वान् कामानवाप्नोति फलं चानन्त्यमश्नुते।
यश्चैकमपि राजेन्द्र वृक्षं संस्थापयेन्नरः।
सोऽपि स्वर्गे वसेद् राजन् यावदिन्द्रायुतत्रयम्

(मत्स्यपुराण/59/16–17)

मत्स्यपुराण के विभिन्न प्रसंगों में वृक्षों एवं पर्वतों की महत्ता वर्णित है। सम्भवतः यह जागृतिसूचक है जिससे समाज में धार्मिक भावनाओं के साथ जुड़कर वृक्षारोपण एवं वनसंरक्षण की भावना को बल मिले। वैज्ञानिक दृष्टि से भी यह प्रतिष्ठापित है कि वृक्ष कार्बन डाइ आक्साइड जैसी हानिकारक गैसों को कम करती है तथा पर्वत जलवर्षा में सहायक हैं।

मत्स्यपुराण में अशोकवृक्ष को शोकविनाशक के रूप में वर्णित किया गया है[5]

पुष्पादौ यः त्रयोदष्यां कृत्वा नक्तमथो पुनः।
अशोकं काञ्चनं दद्याादिक्षयुक्तं दशागुलम्।।

विप्राय वस्त्रसंयुक्तं प्रद्युम्नः प्रीयतामिति।
कल्पं विष्णुपदे स्थित्वा विशोकः स्यात् पुनर्नरः।
एतत् कामव्रतं नाम सदा शोक विनाशकम्।।

एक अन्य प्रसंग में[6] मन्दरपर्वत पर 'भद्रकदम्ब', गन्धमादन पर 'जामुन', विपुलपर्वत पर 'पीपल' तथा सुपार्श्व पर 'वरगद' के वृक्ष की स्थापना का वर्णन मिलता है–

तथा भद्रकदम्वस्तु पर्वते गन्धमादने।
जम्बू वृक्षस्तथाश्वत्थो विपुनेऽथ वटः परम्।।

मत्स्यपुराण[7] के अनुसार अमरगण्डिक नामक पर्वत पर एक कटहल के दिव्य वृक्ष का उल्लेख मिलता है जिसके फलों का रस पीकर वहां के निवासी दस हजार वर्षों तक जीवित रहते हैं:–

गन्धमादन पार्श्वे तु पश्चिमेऽमरगण्डिकः।
द्वात्रिंतिसहस्त्राणि योजनेः सर्वतः सत्रः।।(48)
स्त्रियश्चोप्तपलर्णाभाः सुन्दर्यः प्रियदर्शनाः।
तत्र दिव्यों महावृक्षः पनसः पत्रमासुरः। (50)
तस्य पीत्वा फलरसं संजीवनि समायुतम्।

इस प्रकार भद्रमाल नामक वन में "कालाम्र" नामक महान वृक्ष की व्याख्या की गई है[8]। ऐसा वर्णित है कि इस वृक्ष के फलों का रसपान करके वहां के निवासियों की युवावस्था सदैव बनी रहती है:–

दशवर्ष सहस्त्राणि आयुस्तेष्वामनामयम्।
कालाम्रस्य रसं पीत्वा ते सर्वे स्थिरयौवनाः।।

मत्स्यपुराण के ही एक प्रसंग में[9] मेरुपर्वत के दक्षिणभाग में सुदर्शन नाम के एक विशाल 'जामुन' वृक्ष का वर्णन मिलता है जो सदैव पुष्पों एवं फलों से लदा रहता है। यह उल्लेख है कि इसी जामुन वृक्ष के नाम से यह द्वीप जम्बूदीप के नाम से प्रसिद्ध हुआः–

मेरोस्तु दक्षिणे पार्श्वे निषधस्योत्तरेण वा।(74)
सुदर्शनो नाम महाजम्बूवृक्ष सनातनः।
नित्यपुष्प फलोपेतः सिद्धचारण सेवितः (75)

इसी क्रम में मत्स्यपुराणान्तर्गत देवदार, पीपल तथा कदम्ब वृक्ष शुभफलदायक वर्णित हैं[10]–

तुरीयभागेन चतुदिशं च संस्थापयेत पुष्पविलेपनाद्यान।
पूर्वेण मन्दरमनेक फलावलीभिर्युक्तं यैवः कनकभद्रकम्ब–चिन्है।

पर्वतों का महिमामण्डन मत्स्यपुराण में विस्तृत रूप से स्थान–स्थान पर पाया जाता है। वर्ष पर्वत के रूप में सात वर्ष पर्वतों का वर्णन मत्स्यपुराण[11] में मिलता है। ये पर्वत है–हिमवान पर्वत, हेमकूट पर्वत, निषध पर्वत, मेरुपर्वत, नीलपर्वत, 2 वेत पर्वत तथा श्रृंगवान पर्वतः–

पर्वतप्रभवामिश्च नदीभिस्तु संमंततः।
प्रागायता महपार्श्वाः शडिम वर्ष पर्वताः (10)

अवगाह्युभयतः समुद्रौ पूर्वपश्चिमौ।
हिमप्रायश्च हिमवान् हेमकूटष्च हेमवान्
सर्वत्रः सुयुखश्चामि निषधः पर्वतो महान! (11)
चातुर्वर्ण्यस्तु सौवर्णोः मेरुश्चोल्बमयः स्मश्तः।
चतुर्विशत्सहस्त्राणि विस्तीर्ण च चतुर्दिशम्।।(12)
नीलश्च वैदूर्यमयः श्वेतः पीतो हिरण्यमयः।
मयूरवर्हवर्णश्च शातकौम्भः सः श्रृंगवान।।(17)

वर्ष पर्वतों के अतिरिक्त मत्स्यपुराण[12] में भारतवर्ष में स्थित 7 कुल पर्वतों का भी वर्णन देखने को मिलता है, ये पर्वत हैं–महेन्द्र पर्वत, मलयपर्वत, सह्य पर्वत, शुक्तिमान पर्वत, श्रृक्षवान पर्वत, विन्ध्य पर्वत एवं परियात्र पर्वत

सप्त चास्मिन् महावर्षे विश्रुताः कुलपर्वताः।
महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानवृक्षवानपि।।
विन्ध्यश्चः पारियात्रश्चः इत्येते कुलपर्वताः।
तेशां सहस्त्रशरचान्ये पर्वतास्तु समपतः।।

पर्वतों के प्रति पौराणिक जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से मत्स्यपुराण के 83वें से लेकर 92वें अध्याय तक पर्वतदान के 10 भेदों का भी वर्णन मिलता है। (धान्यशैल, लवणाचल, गुडाचल, रजतशैल, तिलशैल, कार्पासपर्वत, घृतशैल, रत्नशैल, रजतशैल एवं शर्कराचल)

जल संरक्षण (नदी, तालाब, कुवें, झरनें आदि)

मत्स्यपुराण में जल संरक्षण की दिशा में सामान्य जनजागृति उत्पन्न करने के उद्देश्य से विभिन्न जलाशयों के महत्व का वर्णन, नदी, तालाब आदि की भूमिका को धर्म से जोड़ा गया है, अभिप्राय यह है कि जन सामान्य इसके संरक्षण व प्रदूषण मुक्ति के लिए सदैव प्रयासरत रहे।

मत्स्यपुराण के एक अध्याय में[13] तालाबों जलाशयों आदि की स्थापना का सुविस्तीर्ण वर्णन किया गया है:–

प्राप्य पक्षं शुभ शुक्लं सम्प्राप्ते चोत्तरायणे।
पुण्येऽहि विप्रकथिते कृत्वा ब्राह्मणवाचनम!! (5)
प्रागुक्तप्रवणे देशे तड़ागस्य समीपतः।
चातुर्हस्तां शुभां वेदीं चतुरस्त्रा चतुर्मखाम्।। (6)
तथा षोडषहस्तस्थ स्थान्मण्डपश्च चतुर्मुखः।
वेद्याश्च परितो गर्ता रत्निमात्रास्त्रिमेखलाः।।(7)
नव सप्ताथ वा पञ्च नातिरिक्ता नृपात्मजः।
वितस्तिमात्रा योनिः स्यात् षट्सप्तागुंलिविस्तृता।।(8)
गन्तार्श्च हस्तमात्राः स्युस्त्रि पर्वोच्छ्रिमेखलाः।
सर्वतस्तु सवर्णाः स्यु पताकाध्वजसंयुक्तः।। (9)

अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवटशाखाकशतानि तु।
मण्डपस्थ प्रतिदिशं द्वाराण्येतानि कार्येत्।। (10)

अर्थात् तालाब आदि जलाशयों की प्रतिष्ठापना उत्तरायणी शुक्लपक्ष में शुभदिन पर दिशा बोध करते हुए पूजापद्धति से सम्पन्न की जानी चाहिए।

तालाबों में जलापूर्ति निरंतर बनाए रखने के उद्देश्य से मत्स्यपुराण में वर्णित है कि जलाशयों को इस प्रकार संरक्षित किया जाय कि वे वर्षभर भरे रहें। उल्लिखित है कि यदि तालाब मात्र वर्षाकाल तक सीमित रहते हैं तो वे मात्र अग्निश्टोम यज्ञ के बराबर फलीभूत होते हैं, हेमन्त तथा शिशिर काल तक रहने वाले तालाब क्रमशः वाजपेय तथा अतिरात्र मामक यज्ञ का फल देते हैं। बसन्तकाल तक स्थिर जल वाले तालाब अश्वमेघ यज्ञ का फल देते हैं किन्तु ग्रीष्मकाल तक जल से भरे रहने वाले तालाब राजसूय यज्ञ से भी अधिक फल देने वाले होते हैं[14]

प्रावष्ट्काले स्थित तोये ह्यग्निश्टोमफलं स्मष्तम्,
शरत्काले स्थितं यत् स्यात्तदुक्तफलदायकम्।
वाजपेयातिरात्राभ्यां हेमन्ते शिशिरे स्थितम्।।
अश्वमेघसमं प्राह वसन्तसमये स्थितम्।
ग्रीष्मेऽपि तत्स्थितं तोयं राजसूयाद विशिष्यते।।

नदियों की उत्पति तथा महत्ता का वर्णन मत्स्यपुराण का प्रमुख विषय है। मत्स्यपुराण के 114वें अध्याय में गंगा, सिन्धु, सरस्वती, सतलुज, चन्द्रभागा, यमुना, सरयू, देविका, गोमती, धूतपापा, बाहुदा, कौशिकी, निश्चिरा, गण्डकी, चक्षु, लौहित आदि नदियों का उद्गम हिमालय की उपत्यका बताया गया है। वेतुवा, पर्णाशा, चन्दना, सदानीरा, मही, पारा, विदुशी वेणुमती, शिप्रा, अवन्ती तथा कुन्ती आदि नदियों का परिपात्र पर्वत से निकलने का वर्णन मिलता है[15]। इसके अतिरिक्त षोण, महानदी, नर्मदा, सुरसा, मन्दाकिनी, दशार्णा, चित्रकूटा, तमसा, पिशाचिका, पिप्पली, वालुवाहिनी, शक्तिमत्ती, लज्जा, मुकुटा आदि निदयाँ श्रृक्षवान् से तथा तापी, पूर्णानदी, वैतरणी, विश्वमाता, तौरा, महागौरी, दुर्गा आदि नदियों का उद्गम विन्ध्यांचल की उपत्यकाओं को माना गया है। महेन्द्र पर्वत से त्रिसामा श्रृषिकुल्या, इक्षेला, अचला तथा वंशधरा, उद्गमित हुई है तथा सह्यपर्वत से गोदावरी तुंगभद्रा एवं काबेरी नदियों के निकलने का वर्णन मत्स्यपुराण[16] ने किया है।

गंगा तथा यमुना नदी को समान एवं श्रेष्ठ फलदायी माना गया है। इसमें वर्णित है कि गंगा ज्येष्ठ होने के कारण सर्वत्र पूजनीय है।[17] वैज्ञानिक कारण भी पुष्टि करते हैं कि गंगा की घाटी सर्वाधिक उपजाऊ तथा अन्न–धन प्रदान करती है।

गंगा च यमुना चैव उभे तुल्यफले स्मृते।
केवलं ज्येष्ठभावेन गंगा सर्वत्र पूज्यते।।

मत्स्यपुराण[18] में विष्कम्भ पर्वत पर स्थित अरूणोद, मानस, सितोद तथा भद्र नामक चार सरोवरों की भी व्याख्या की गई है:–

अरुणोदं मानसं च सितोदं भद्रसञ्ज्ञितम्।
तेषामुपरि चत्वारि सरांशि च वनानि च।।

वनस्पति एवं औषधीय पादप सरंक्षण

मत्स्यपुराण में भिन्न–भिन्न आख्यानों में वनस्पति एवं औषधीय पादपों का वर्णन प्रचुरता से देखने को मिलता है[19]। इसमें वर्णित है कि हिमालय में जिन पौधों की संख्या अधिकता में पायी जाती है उनमें शाल, ताड़, कनेर, सेमल, वरगद, पीपल, शिरसा, आमला, हर्रे, बहेड़े, चन्दन, बेल, रीठा, अखरोट, नागरमोथा, अर्जुन, कचनार, खजूर, नारियल, चिरौंजी, जायफल, इलायची, पलाश, चिरायता, जूही, मालती, चम्पा, कुटज, गुग्गुल, वेर, मदार प्रमुख थे।

शालैस्तालैस्तमालेश्व कर्णिकारे सशामलैः।
न्यग्रोधैश्च तथाश्वत्थै शिरीषै शिशंपाद्रुमैः।।
श्लेष्मात कैरामलकैर्हरीतक विभीतकैः
भूर्जैः समुत्र्चकैर्वाणैर्वृक्षैः सप्तच्छदूद्रुमैः।।
महानिम्वैस्तथा निम्बैर्निगुण्डीमिर्दरिद्रुमैः।
देवदारुमहावृक्षैस्तथा कालेयकद्रुमैः।।
पद्मकैश्चन्दनैर्बिल्वे कपित्थै रक्तचन्दनैः।
आम्रातारिष्टकाक्षौटैरब्दकैश्च तथार्जुनैः।।

(मत्स्यपुराण/118/3–6)

इसके अतिरिक्त यह भी वर्णित है कि हिमालय क्षेत्र फल–फूल तथा अन्न प्रदान करने वाले एवं शाक–भाजी आदि के पौधों से भी परिपूर्ण था। कहीं कद्दू, परवल, करैला, पीतघोषा, पीपर, नागवल्ली तथा सेम की लताओं का वर्णन मिलता है तो कहीं बैंगन तथा भटकटैया के फल, मूली तथा जड़ वाले शाक, खादुकण्टक (पिंडालू) विदूसार तथा सरसों एवं तिल के पौधे आदि का वर्णन मिलता है। इन सभी के अतिरिक्त मत्स्यपुराण में आयु, यश तथा बल प्रदान करने वाली, भूख–प्यास के कष्ट को मिटाने वाली विभिन औषधियों का वर्णन मिलता है–

औषधीभिर्विचित्राभिर्दीप्यमानाभिरेव च।
आयुष्याभिर्यशस्यार्भिर्वल्याभिश्चष्नराधिप।।
जरामृत्युभयन्नीभि क्षुद्भहनीभिरैव च।
सौभाग्यजननीभिश्च कृत्स्नाभिश्चाप्यनेकशः

(मत्स्यपुराण 118। 33–34)

मत्स्यपुराण के अनुसार कैलाश के दक्षिण पूर्व में हेमश्रृंग नामक पर्वत[20] तथा पश्चिम में वरुण नामक दिव्यपर्वत[21] औषधियुक्त पादपों से भरा है:–

कैलाश दक्षिणै प्राच्यां शिवं सर्वोशधिं गिरिम्

(म0पु0 ।121। 10)

कैलाशात् पश्चिमामाशं दिव्यं सर्वोषधिगिरिः।
वरुणः पर्वतश्रेष्ठों रुक्मधातु विभूषितः।।

(म0पु0 ।121। 19)

मत्स्यपुराण के एक अन्य प्रसंग में यह सशक्त प्रमाण दिया गया है कि राजा को भी अपने प्रजा की कल्याण भावना से अपने दुर्ग में विभिन्न प्रकार की औषधियाँ संग्रहीत करनी चाहिए[22]

एवमादीनि चान्यानि राजा संचिनुयात्पुरे।
अभयामलके चोभे तथैव च विभीतकम्।।
प्रियंगुधातकीपुष्पं मोचाख्यां चार्जुनासनाः।
अनन्ता स्त्री तुवरिका ष्योणाकं कट्फलं तथा।।
भूर्जपत्रं शिलापत्रं पाटलापत्रलोमकम्।
समंगात्रिवश्तामूलकार्पासगैरिकात्र्जनम्।।
विद्रुमं समधूच्छिष्टं कम्भिका कुमुदोत्पलम्।
न्यग्रोधोदुम्बराष्वत्य किंशुकाः शिंशपा शमी।।
प्रियालपीलुकासारीशिरीषाः पद्यकं तथा
विल्वोऽग्निमन्थः प्लक्षश्च ष्यामाके च वको धनम्।।
राजादनं करीरं च धान्यंक प्रियकस्तथा।
कंकोलाशोकवदराः कदम्बरवदिरद्वयम्।।
एषां पत्राणि साराणि मूलानि कुसुमानिच।
एममादीनि चान्यापि कशायाख्यो गणों मतः।।
प्रत्येकं नृपश्रेष्ठस्तु राजा संचिनुयात्परे।।

वन्यजीव संरक्षण

वन्यजीव संरक्षण प्राकृतिक संरक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू है। प्रकृति ने स्वयं को स्थिर बनाये रखने के उद्देश्य से जीव–जन्तुओं की ऐसी संरचना की है कि किसी भी एक का अस्तित्व यदि संकट में आ जाय तो सृष्टि का स्थायित्व खतरे में पड़ जाता है। हमारे पुराणों में भी जागृति प्रदान करने के उद्देश्य से वन्य जीवों का वर्णन प्रस्तुत किया है। एक प्रसंग में[23] कहा गया है कि हिमालय में मोर, कठफोरवा, गौरैया, कोयल, कादम्बक, हंस, जलकौआ, हरिल, तोते, बगुले, तीतर, शरभ, लोहपृष्ठ, बतख, कबूतर, बटेर, मुर्गे, पपीहा, सारस, नीलकंठ आदि पक्षी मौजूद थे।

ददृशे च तथा तत्र नानारूपान पतत्रिण।
मयूरान शतपत्रांश्च कल विंकाश्च कोकिलान्।।

तदा कादम्बकान् हंसान् कोयष्टीन खञ्जरीटकान्।
कुरुरान् कालकूंटाश्च खट्षागल्लुब्धकास्वथा।।
गोक्षवेऽकास्तथा कुम्भानधार्तराष्ट्रान्छुकान् बकान्।
धातुकांश्चक्रावकांश्च कटा कूष्टिट्टिमान् भटान्।।

(म0पु0/118/49–51)

इसी अध्याय में[24] विभिन्न वन्य जीव जन्तुओं का भी वर्णन किया गया है। प्रमुखतः हिरन, बारासिंगा, कस्तूरीमृग, सांभर, चीतल, वाघ, शेर चीता भेड़िया, रीछ, वानर, लोमड़ी, हाथी, नीलगाय, बैल, गधे, भेड़ सूवर आदि का प्रसंग भिन्न–भिन्न प्रसंगों में किया गया है।

ज्ञातव्य है कि चीता आज लुप्तप्राय जन्तु घोषित किया जा चुका है तथा वाघों तथा शेरों को बचाने के लिए कई राजकीय परियोजनायें चलाई जा रही है।

श्वापदान विविधाकारान् मृगांश्चैव महामृगान्।
व्याघ्रान केसरिण सिंहान द्वीपिनः शरमान् वृकान्।।
श्रृक्षांस्तरक्षूश्च वहन गोलांगलान सवानरान्।
शशलोमान सकादम्बान् मार्जारान् वायुवेगिनः।।
तथा मत्रांश्च मातंगान महिशान् गवयान् वृषान्।
चमरान् सृमरांश्चैव तथा गैरखरानपि।
उरभ्राश्च तथा मेषान् सारंगनाथ कुकुरान।
नीलांश्चैव महानीलम करालान् गृगमातृकान्

जलीय जन्तुओं में कछुवे, मछलियाँ तथा घडियाल का वर्णन भी मत्स्यपुराण[25] में पाया जाता है:–

मकरानां च मत्स्यानां चण्डानां कच्छपै सह।
तत्र मरकतखण्डानि वज्राणां च स्रहसशः।।

मत्स्यपुराण में वन्य जन्तु संरक्षण के प्रति समर्पित यह श्लोक दर्शाता है कि उस समय महान ऋषियों की कृपा से हिंसक जीव भी एक दूसरे की हत्या नहीं करते थे अतः एक प्रकार से सामाजिक शिक्षा प्रदान की गई है कि जीवजन्तुओं का शिकार नही करना चाहिए[26]:–

तत्प्रसादात् प्रभायुक्तं स्थावरैर्जगमैस्थता।
हिंसन्ति हि न चान्योन्यं हिंसकास्तु परस्परम्।।

खनिज संरक्षण

मत्स्यपुराण में खनिजों तथा मणियों का वर्णन भी भिन्न–भिन्न स्थानों पर देखने को मिलता है[27]। इसमें वर्णित है कि राजा पुरूरवा ने एक सरोबर के समीप हीरे, मोती, स्वर्ण, चाँदी, नीलम, माणिक्य, महानील, पुखराज, कर्केतन, लाजावर्त, रुधिराक्ष, चन्द्रकान्त, गोमेद, पित्तक, धूलीमणि आदि मणियाँ प्रचुर मात्रा में देखी।

भद्रमरागेन्द्रनीलानि महानीलानि पार्थिव।
पुष्परागाणि सर्वाणि तथा कर्केतनानि च।।

तुत्थकस्य तु खण्डानि तथा शेषस्य भागशः।
राजावर्तस्य मुख्यस्य रुधिराक्षस्य चाप्यथ।।
सूर्येन्दुकान्तयश्चैव नीलें वर्णान्तिमश्च यः।
ज्योतिरस्य रम्यस्य स्यमन्तस्य च भागशः।।
सुरोरगवलक्षाणां स्फटिकस्य तथैव च।
गोमेदफ्तिकानां च धूलीमरकटस्य च।।

(म0पु0/119/13–16)

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि मत्स्यपुराण में भिन्न–भिन्न प्रसंगों में प्राकृतिक सम्पदा का पर्याप्त उल्लेख मिलता है तथा इनके संरक्षण हेतु सामाजिक चेतना जागृत करने के उद्देश्य से इन्हें धार्मिक कार्यों के साथ जोड़ा गया है। जिससे लोगों के मन में इनके प्रति सोच एवं श्रद्धा बनी रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुसुम डोबरियाल एवं जे0के0 गोदियाल (2007) पद्मपुराण में वर्णित औषधीय पादपों की वर्तमान में चिकित्सकीय उपयोगिता **औषधीय पादपः संरक्षण, संवर्धन एवं उपयोगिता** (सम्पादन–डी0आर0 खन्ना एवं अन्य) अध्याय–25 पृ0 299–304 दया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
2. कुसुम डोबरियाल एवं जे0के0 गोदियाल (2010) पद्मपुराण में वर्णित औषधीय वनस्पति संरक्षण, **वेदों में विज्ञान** अध्याय–22 (सम्पादन–डी0आर0 खन्ना एवं अन्य) दया प्रकाशन नई दिल्ली (प्रेस में, पृ0 297–300)
3. मत्स्यमहापुराणांक, वर्ष 58 (1984) कल्याण अंक (सम्पादन–राधेश्याम खेमका) पृ0 468
4. मत्स्यपुराण अ0 59 श्लोक 1–19 कल्याणांक, (1984)
5. मत्स्यपुराण अ0 101, श्लोक 9–10
6. वही अ0 113, श्लोक–47
7. मत्स्यपुराण अ0 113, श्लोक 48–50
8. वही अ0 113 श्लोक 55
9. वही–अ0 114, श्लोक 74–75
10. वही–अ0 83, श्लोक 20
11. वही–अ0 113, श्लोक 4–37
12. वही–अ0 114, श्लोक 17–18
13. वही–अ0 58, श्लोक 1–52
14. वही–अ0 58, श्लोक 53–54
15. वही–अ0 114 श्लोक 20–24

16.वही–अ0 114, श्लोक 25–33
17.वही–अ0 108, श्लोक 33
18.वही–अ0 113, श्लोक 46
19.वही–अ0 118, श्लोक 1–55
20.वही–अ0 121, श्लोक 10
21.वही–अ0 121, श्लोक 19
22.मत्स्यपुराण–अ0 217, श्लोक 75–81 सम्पादक पं. तारिणीश झा (1988) हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
23.मत्स्यपुराण कल्याणांक–अ0 118 श्लोक 46–55
24.वही–अ0 118, श्लोक 56–59
25.वही–अ0 119, श्लोक 12
26.वही–अ0 118, श्लोक 63
27.वही–अ0 119, श्लोक 1–37